शोध मंथन Vol. XI No.III July-Sept. 2020 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 7.760 (SJIF)

जयपुर भित्ति चित्रों का कलात्मक संसार

कुमारी रीना
शोधार्थिनी, ललित कला विभाग
मेरठ कॉलिज, मेरठ
Email: renubrt86@gmail.com

सारांश

राजस्थानी चित्रकला के इतिहास में जयपुर शैली का महत्वपूर्ण स्थान है। जयपुर कलम के उद्भव एवं विकास से आशय उस चित्रकला से है जो जयपुर के गर्भ से जन्म लेकर विकसित हुई है। जिस प्रकार राजस्थानी शैली में कई शैलियाँ अपना निजस्व लिए हुए हैं। उसी प्रकार जयपुर कलम की चित्राकृत्तियों में विषयगत विविधताएँ भी हैं तथा धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, उत्सव, शिकार आदि पर आधारित 'महाभारत', 'रागमाला', 'दुर्गापाठ', 'मधुमालती', 'रागरागिनी', 'कृष्णलीला', 'नायक–नायिका भेद', 'भागवतपुराण', 'दुर्गासप्तशती', 'बिहारी सतसई', 'रामायण' आदि विषयों का कलामय अंकन कलाकृत्तियों में देखने को मिलता है जो कि हवेली, महल, छतरी, भवन, देवालय आदि की भित्तियों व छतों पर लघु चित्र, भित्ति चित्र व ग्रन्थ चित्र आदि का चित्रांकन फ्रेस्को, टेम्परा (मोराकसी, आराईस, आलागीला), वसली आदि पर किया गया है। जयपुर कलम का चित्रांकन परम्परागत शास्त्रीय शैली पर आधारित है। यहाँ पर राजाओं, सम्राटों ने अपने–अपने शसनकाल अपनी रूचि के अनुरूप ही चित्रण कार्य करवाया है जो कि उल्लेखनीय रहा है।

प्रस्तुत शोध पत्र में जयपुर शैली में भित्ति चित्रों में मानवाकृतियों में रेखा रंग, रूप, आभूषण, वेशभूषा व शारीरिक गठन आदि का विस्तृत वर्णन दिया गया है।

प्रस्तावना

राजस्थान राज्य को क्षेत्रफल के दृष्टिपात से भारत के राज्यों में प्रथम स्थान प्राप्त है। 'इसके पूर्वीकोण में बसा जयपुर इसकी राजधानी है।''[1] और इसी के नाम से जयपुर जनपद को गठित किया गया है। तथा इसके उत्तर में बीकानेर, सीकर एवं चुरू स्थलों की सीमा, पूर्व में अलवर, करौली, भरतपुर एवं ग्वालियर राज्यों की सीमा, दक्षिण में ग्वालियर, कोटा, बूँदी, टोंक व उदयपुर रियासतों के अलावा पश्चिम में अजमेर, मारावाड़, जोधपुर एवं किशनगढ़ है जो इन राज्यों की सीमाओं से सम्बन्धित है। इस जनपद का सम्पूर्ण क्षेत्रफल ''11,117.8वर्ग किलोमीटर है।''[2]

प्राचीनकाल से ही राजस्थानी शैली को सांस्कृतिक एवं कलात्मक दृष्टिपात से गौरवशाली

होने का सौभाग्य प्राप्त रहा है। राजस्थान में जिस कला–साधना का प्रारम्भ हुआ, वह निरन्तर अटूट परम्परा के रूप में चलती प्रतीत है। अतः राजस्थान प्रान्त एक रेगिस्तान के रूप में दृष्टव्य है। किन्तु इसकी मरूभूमि लघुचित्रों की अनमोल हरीतिमा से पूर्ण है। राजस्थानी कला के विकास क्रम पर दृष्टि डालें तो यह स्पष्ट होता है कि राजस्थानी शैली की ऐतिहासिक कलायात्रा शैलचित्रों से आरम्भ होती है। कोटा जनपद के बैराठ, दरा, आलणिया तथा भरतपुर जनपद के दर नामक स्थलों के शैलाश्रयों में आदिम मानव द्वारा बनाये गये मृतभाण्डों और रेखांकन की कलागत उकेरियाँ इस क्षेत्र की आरम्भिक चित्रांकन परम्परा को उदघाटिक किया है।

भारतवर्ष में राजपूत सम्राटों के रहने वाले प्रदेश को ही 'राजस्थान' कहा गया तथा इसको रायवाड़ा, रायथाना और राजपूताना भी कहा गया है। तथा राजस्थानी चित्रकला का सर्वप्रथम वैज्ञानिक विभाजन 'स्वर्गीय डॉ0 आनन्द कुमार स्वामी' सन् 1916 ई0 में कया है। उनके अनुसार राजपूत चित्रकला का विषय राजपूताना और हिमाचल, पंजाब की पहाड़ी रियासत से सम्बन्धित है। राजस्थानी चित्रकला के प्रमुख चार केन्द्रों में विभाजित किया गया है। जो इस प्रकार है– मेवाड़, मारावाड़, हाड़ौती, ढूँढार आदि हैं। और इनके अन्तर्गत विभिन्न शैलियाँ व ठिकाने आते हैं। जो कला की दृष्टि से उल्लेखनीय है। जयपुर ढूँढार के अन्तर्गत आने वाली शैली है।

''जयपुर का गुलाबी नगर देश–विदेश में अपनी योजना स्थापत्य, चित्रकला व सौन्दर्य के लिए प्रसिद्ध है। बन्धेज की साड़ियाँ, साँगानेरी छापे और कागज, जयपुरी जूतियाँ, काँच की चूड़ियाँ, लाख के बने खिलौने तथा कंगन आदि अनेक हस्तशिल्प के लिए भी यह नगर प्रसिद्ध है।''[3]

आमेर 11वीं सदी से कछवाहा वंश के राजपूतों की राजधानी रहा सम्राट सवाई जयसिंह ने 1727 ई0 में जयपुर नगर की स्थापना करायी। कछवाहा वंश के शासकों के राज्यकाल में पल्लवित होने के कारण जयपुर को कछवाहा कलम भी कहा गया है। अतः आमेर कलम जयपुर को विरासत में मिली। इस कलम में अन्य कलाओं के साथ–साथ चित्रकला में नये रंग–रूप में उभरकर आयी। जयपुर शैली के ग्रन्थ चित्रों, भित्ति चित्रों व लघु चित्रों की विषय वस्तु परम्परागत शास्त्रीय शैली पर आधारित रही है। यहाँ के चित्रकारों ने धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, प्राकृतिक, आखेट व अन्य विषयों पर चित्रांकन हवेली, देवालय, महल, छतरी, किला, भवन तथा सामान्य जन के निवास स्थल आदि पर फ्रेस्को बूनो, फ्रेस्को सेको तथा टेम्परा तीनों पद्धतियों द्वारा चित्र बनाये गये हैं। जयपुर कलम ने सन 1600 से 1900 के बीच जयपुर शैली के एक बड़े हिस्से को प्रभावित किया। इसके उत्तर में स्थित सीकर, शेखावटी, मुकुन्दगढ़, लक्ष्मणगढ़, खेतड़ी, पिलानी आदि ठिकानों पर जयपुर शैली में चित्रांकित विभिन्न भित्ति चित्र वर्तमान में भी वहाँ के भवनों में दृष्टव्य हैं। इनके अतिरिक्त धोलापुर, भरतपुर, करौली और टोंक आदि स्थलों की चित्राकृत्तियों पर जयपुर कलम का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। धोलापुर और भरतपुर के चित्रों में मथुरा और जयपुर का संयोग है।

भगवन्तदास के देहान्त के उपरान्त सम्राट मानसिंह (1589–1614 ई0) ने आमेर का

राज्यकाल संभाला। इन्होंने अपने समय में साहित्य व कला को प्रोत्साहित किया तथा आमेर के दुर्ग में बड़े महलों को बनवाया और दनकी दीवारों को विभिन्न विषयों पर आधारित चित्राकृत्तियों से सुसज्जित करवाया है। इनके द्वारा 'गोविन्द देवजी का मन्दिर' पटना में, 'मान मन्दिर' काशी में तथा 'सरोवर घाट' वृन्दावन में 1590 ई0 में, 'वैकुण्ड देवालय' व जगन्नाथपुरी में कई देवालयों को बनवाया गया। सम्राट मानसिंह द्वारा फाल्गुन नदी के छोर पर एक कस्बा स्थापित किया गया जिसका नाम 'मानपुर' रखा।

मिर्जा सम्राट सवाई जयसिंह (1621–1667 ई0) आमेर के सिंहासन पर बैठे। और इन्होंने ''आमेर के दुर्ग में 'गणेशपोल', 'दीवान–ए–आम', 'शीशमहल', 'सुख मन्दिर' आदि का निर्माण करवाया तथा संघी 'झूंथाराम का देवालय' काँच की पच्चीकारी से चित्रित करवाया गया है।''[4] यह आमेर का उत्कृष्ट उदाहरण है। इनके उपरान्त सम्राट रामसिंह, बिशन सिंह के पश्चात महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय (1699–1743) ई0 ने राज गद्दी संभाली। इन्होंने जयनगर के नाम से एक नया नगर बनाया तथा इनके समय में '''सिसोदिया रानी महल', 'सिटी पैलेस', 'नानाजी की हवेली', 'चूर सिंह की हवेली', 'भवानीराम बोहरा का मन्दिर', 'पुण्डरीक जी की हवेली'''[5] आदि में भित्ति चित्र बनवाये हैं। ये भित्ति चित्र 18वीं शताब्दी के हैं। इन चित्राकृत्तियों में जयपुर व मुगलकलम के लघु–चित्रों की साम्यता दृष्टव्य है। व अन्य भवनों के बीच की कृत्तियों में 'गोपियों एवं गायों के साथ बाँसूरी बजाते कृष्ण', 'शेषशायी विष्णु' व 'रामदरबार' चित्रित है।

इन हवेलियों के निकट चार देवालय निर्मित है। 'राम कुँवरजी', 'नृत्यगोपाल जी', 'सीतारामजी', 'रघुनाथजी' आदि। इनके प्रमुख द्वार के ऊपर की ओर चित्रण हुआ है। इसमें 'कांटा निकालती नायिका', 'राधाकृष्ण चौपड़ खेलते', 'अंगडाई–लेती नायिका', शुक–सारिका आदि छोटे–छोटे चित्रों का अंकन है। तथा 'ज्ञान–गोपालजी के मन्दिर' की बाहरी भित्तियों पर 'राम–रावण युद्ध', 'जुलूस', 'होली' आदि का चित्रांकन टेम्परा तकनीक से किया गया है। इनके समय में 'ताल कटोरा', 'चन्द्रमहल' व 'जयनिवास बाग' जैसी इमारतें भी बनवायी गयी हैं तथा 'पुण्डरीक की हवेली' में 'गणगौर की सवारी', 'शिकार', 'बारहमासा' व 'फूल–पत्तियों के अलंकरण आदि का चित्रण हुआ है। 'भवानीराम बोहरा के मन्दिर' में सफेद प्लास्टर पर आला–गीला पद्धति में भित्ति चित्रांकन हुआ है। इसका आकार (24×24) फीट है। जो 'महाभारत' व 'रामायण' पर आधारित है। 'सिसोदिया रानी का महल' इसके भित्ति चित्र फ्रेस्को बूनो तकनीक में चित्रांकित है। 'गोविन्द देवजी के मन्दिर' में 'गोपियों संग होली खेलते श्रीकृष्ण', 'राम दरबार', 'शिव पार्वती', 'कृष्ण राधा' आदि विषयों पर अराईस तकनीक में चित्रण कार्य हुआ है तथा मोती घनशयम जी की हवेली के चित्र 'एक स्त्री–उबासी लेते हुए', 'राम सीता हनुमान', 'नायिका शीशा देखते हुए', 'श्रीकृष्ण पेड़ के नीचे बाँसूरी बजाते हुए' आदि चित्रों का अंकन हुआ है। अतः 'सिटी पेलैस' में सम्राटों के 'व्यक्ति चित्र', 'हाथी की लड़ाई', 'श्रीनाथ जी', चौगान में घोड़ें की लड़ाई आदि का चित्रांकन है।

इनके उपरान्त सिंहासन पर सम्राट ईश्वरी सिंह (1743–1750 ई0) में बैठे। इनके राज्यकाल में चित्रकला का शिल्पकला का कार्य उन्नतिपूर्ण रहा। इन्होंने बगरू सन्धि में विजय

प्राप्ति की यादगार में एक 'विजय स्तम्भ' का निर्माण करवाया इसको 'ईसरलाट' भी कहते हैं। तथा सांगानेर में कागज का एक कारखाना भी खोला। अतः इनको कागज काटकर उसमें विभिन्न प्रकार की फूल–पत्तियाँ व आकृतियाँ बनाने में रूचि थी। जो वर्तमान में सम्राट मानसिंह द्वितीय के संग्रह में है। इनके समय की कुछ चित्रित कृत्तियाँ इस प्रकार हैं–

1. ए0जी0, 1399, 'महाराजा ईश्वरी सिंह चौगान में हाथियों की लड़ाई देखते हुए'।
2. 'जयपुर का चौगान पर राजकीय खेल'।
3. 'खेल और मनोरंजन'।

इनके समय का प्रमुख कलाकार लाल चितेरा रहा है तथा साहिबराम, उदयराम, हीरा, सीताराम, सतराम, जगरूप आदि कलाकारों ने इनके समय में कार्य किया है। इनके पश्चात सवाई–माधोसिंह प्रथम (1750–1767 ई0) सिंहासन पर बैठे इनके राज्यकाल में 'जयपुर का डूँगरी दुर्ग', 'सांगानेर का किला', 'मधु निवास महल', गलता के देवालयों तथा चन्द्रमहलों की दिवारों को भित्ति चित्रों से सुसज्जित करवाया गया। सन 1764 ई0 में निर्मित 'ढोलामारू' इस दौर की विशिष्ट सचित्र कलाकृति मानी जाती है। 'सवाई माधोसिंह प्रथम नाव पर सवार', 'ऊँची कुर्सी पर बैठे संगीत सुनते सवाई माधोसिंह प्रथम' चित्र अंकित है। 'महाराजा सवाई माधोसिंह का आदमकद' व्यक्ति चित्र 1750 ई0 में रामजीदास द्वारा चित्रित किया गया। इनके समय में सीताराम, साहिबराम, रामजीदास, खुशपाल, खुशाला, श्यामलाल, हीरा, उस्ता, भवानीराम, मायाराम, गोविन्द, कृष्णा, त्रिलोक आदि कलाकारों ने चित्रण कार्य किया। इनके उपरान्त सवाई पृथ्वी सिंह ने राजपाठ संभाला। इनके समय में कलाकारों ने चित्रांकन के स्थान पर वर्णों को न भरकर मोती, लकड़ी तथा लाख के मणियों को चिपकाकर आलंकारिक मणिकुट्टिम की प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया। भवानीराम, खुशाला, जीवन, घासी, गोविन्दा, गोपाल, बालगोविन्द, रामजीदास, हुक्मा, उस्ता, सालिगराम, हीरानन्द, त्रिलोक, गुमान आदि यहाँ के चितेरे रहे हैं। इनकी मृत्यु उपरान्त सम्राट सवाई प्रताप सिंह (1778–1803 ई0) सिंहासन पर बैठै। इन्होंने अपने प्रयासों से कलात्मक जीवन में नवीन पृष्ठ जोड़ा। इन्होंने 1782 ई0 में हवामहल का निर्माण करवाया जो राधा कृष्ण को समर्पित है। इसको बनाने वाले कारीगर लालचंद उस्ता है। 'ब्रजनिधि का देवालय', 'राजराजेश्वर मन्दिर', 'प्रतापेश्वर का देवालय', 'गोवर्धननाथ जी का मन्दिर', 'आनन्द बिहारी', 'ज्ञानगोपाल जी' तथा 'जनाना महल' आदि का निर्माण सवाई प्रताप सिंह ने करवाया है। 'दीवान–ए–आम' में पाँचवी मंजिल का निर्माण भी करवाया।

इनके समय में 'महाभारत', 'रागमाला', 'मधुमालती', 'दुर्गापाठ' आदि पर सम्पूर्ण श्रृंखलाएँ निर्मित की गयी। तथा 'राग–रागिनी', 'नायिका भेद', 'कृष्णलीला', 'भागवत पुराण', 'दुर्गासप्तशती' आदि का चित्रण महत्वपूर्ण रहा है। गोपाल, उदय, गोविन्दा, रामसेवक, सालिगराम, चिमना, नवला रामकिशन, लक्ष्मण, धन्ना, सीताराम, शिवदास, लेखमा, हुक्मा, हरनारायण आदि इनके काल के चितेरे रहे हैं। 'सिसोदिया रानी के महल' की भित्तियों पर 'शिकार', 'कुश्ती', 'शेषशायी विष्णु', 'कृष्ण उपाख्यान' और 'यूरोपियन महिला' व 'पुरुष आकृत्तियाँ', 'फ्रेस्को बूनो' तकनीक में चित्रांकित की गयी तथा नानाजी की हवेली की दिवारों पर 'फ्रेस्को सेको' पद्धति में चित्रण

करवाया है। राग–रागिनियों पर आधारित बने हैं। तथा 36 राग–रागिनियों की पूरी श्रृंखलाएँ इस हवेली में अण्डाकार रूप में निर्मित है। पक्षी, लताएँ, फूल–पत्तियाँ आदि से अलंकरत है। इनके अलावा कुछ कलाकृत्तियाँ इस प्रकार हैं–

1. 'देवी और शुभ आकाश में लड़ते हुए' यह चित्र सालिगराम द्वारा निर्मित है।
2. गणेश व सरस्वती चित्राकृति रामसेवक द्वारा बनाया गया है।
3. राग भैरव की रागिनी की पाँचवी सैन्धवी (1779–1804) में चित्रित हुई है। अब मानसिंह द्वितीय के संग्रहालय में है।
4. 'जंगल में लैला–मजनू' यह 1900 ई0 में अंकित की गयी है और मानसिंह द्वितीय के संग्रहालय में है।
5. 'सोहनी महिवाल' 1800 ई0 निर्मित की गयी है जो मान सिंह संग्रहालय में है।
6. 'कृष्ण का कुन्दनपुर में पहुँचना' यह (1792) ई0 में घासीराम द्वारा निर्मित्त श्रीमदभागवत पर आधारित श्रृंखला है।
7. 'भागवत दशम स्कन्द द्वारिका जाते कृष्ण' (1792) में घासीराम द्वारा चित्रित हुई है।

इनके द्वारा 'दुर्गापाठ सैठ–1' की चित्र श्रृंखला 1799 ई0 में चित्रित की गयी जिसकी माप 40.5x30 सेमी0 है तथा इसमें 102 चित्राकृति बनी है। वर्तमान में यह श्रृंखला सवाई मान सिंह, द्वितीय संग्रहालय में सुरक्षित है। इसको बनाने में सात वर्ष का समय लगा है। यह गोपाल व हुक्मा चितेरो द्वारा चित्रांकित की गयी।

इनके पश्चात् सवाई जगत सिंह (1803–1835ई0) ने राजपाठ संभाला इन्होंने अपने समय में कवियों कलाकारों व विद्वानों को संरक्षण दिया। कवि पदमाकर भट्ट ने 'राम–रसायन' और 'जगत विनोद' की रचना करके जयपुर घराने को 'बिहारी सतसई' से जोड़ा। 'रास मण्डल' तथा 'गोवर्धनधारण' की कलाकृत्तियाँ तत्कालीन कला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। अतः इनके समय में 'पुण्डरिक जी की हवेली' के भित्ति चित्र व तिथि युक्त 'विष्णु सहस्त्रनामा' (1806 ई0), 'मधुमालती' (1807 ई0) की चित्राकृत्तियाँ निर्मित हुई है। एक कलाकृति 'अपनी प्रेमिका व महिला सेविकाओं के साथ महाराजा सवाई जगत सिंह' यह कलाकृति 1850 ई0 में चित्रित की गयी है। इनके काल में साहिबराम, कनीराम, रामलला, जीवा, रामजीदास, जयकिशन, मंगल, बिरजू, हरनारायण, गोविन्दराम, त्रिलोक, पन्नालाल, मंगत, लेखमा आदि कलाकारों ने कार्य किया तथा 'प्राचीन पद्धति में ह्रास के लक्ष्ण प्रकट होने लगे।'[6] सम्राट जगतसिंह की मृत्यु के पश्चात इनकी पत्नी कंकावति ने जगत शिरोमणि देवालय 9 लाख 72 हजार रूपये के खर्च से आमेर में बनवाया, यह दक्षिण शैली में बना है तथा इनके उपरान्त के सम्राट द्वारा इस देवालय के गुम्बदों में अवतारों की विशिष्ठ चित्राकृतियाँ बनवायी है।

इनके उपरान्त सवाई जयसिंह द्वितीय व तत्पश्चात महाराजा सवाई रामसिंह (1835–1880ई0) के सिंहासन पर बैठे ये अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे। इन्होंने महाराजा स्कूल ऑफ आर्ट की स्थापना 1857 ई0 में की जिसका नाम 'हुनरीमदरसा' रखा गया तथा साहिबराम

जैसे अनेक कलाकार अपनी परम्परा बनाये रखने का प्रयत्न करते रहे। परन्तु विदेशी प्रभाव के आगमन के साथ ही जयपुर शैली के चित्रांकन की प्राचीन तकनीक में पतन के चिन्ह दिखाई पड़ने लगे जिसका प्रभाव जयपुर शैली व कम्पनी शैली पर पड़ने लगा तथा सम्राट जयसिंह द्वितीय और राजा रामसिंह के शासनकाल में प्राचीन तकनीक का पतन अपने चरमौत्कर्ष पर पहुँच गया।

अतः उनके दरबारी कलाकार यथार्थवादी शैली में चित्रण कर रहे थे। जो परम्परा के बिल्कुल अलग या फोटोग्राफी से व्यक्ति चित्र चित्रांकित करने में लगे थे। सम्राट के आदेशानुरूप जयपुर के भवनों को गुलाबी रंगों से रंगा गया तभी से जयपुर को गुलाबी नगर कहा जाने लगा। 'महाभारत सैट' व 'भागवतगीता' पर यूरोपियन प्रभाव देखने को मिलता है। जयपुर शैली धीरे–धीरे सन 1900 ई0 तक यूरोपियन प्रभाव से अपनी मौलिकता नष्ट कर बैठी।

जयपुर शैली की कलाकृत्तियों में निम्नलिखित विशेषताएँ देखने को मिलती है जो इस प्रकार है–

''मानवाकृत्तियों में नारी के एकचश्म व गोल चेहरे मीनाकृत नेत्र, ऊँचा–ललाट, लम्बी नाक, लम्बे केश तथा नारी आकृति मध्य कद की बनी है। पुरुषाकृति मध्य कद की व भरा हुआ शरीर, ऊँचा ललाट अंकित किया गया है। गोल मुख, मीन नयन, गोल नाक, मोटे ऊधर, दाढ़ी व लम्बी मूँछे बनी हैं।''[7]

नारी आकृति को वेशभूषा में अलंकरण युक्त लहँगा, चुन्नटदार घाघरा व पारदर्शी व गोटेदार चुनरी, डोरीदार ऊँची चोली चित्रित है। पुरुषों में लम्बा घेरदार जामा, अंगरखा, दुपट्टा, पटका, पंचरंगा पगड़ी निर्मित है।

यहाँ पर स्त्री आकृति के आभूषणों में नासिका में नथ, माथे पर बोरला, कानों में कर्णफूल अंकित किये हैं। गले में कंठी व हार पहने चित्रित किया गया है। हाथों में बाजूबन्द, चूड़ियाँ, कड़े, अँगूठी, छल्ला व हाथफूल चित्रित है। कटि पर तगड़ी निर्मित्त है। पैरो में बिछिया, पायल व जयपुरी जूतियाँ अंकित है। तथा पुरुषों के कानों में कुण्डल अंकित है। गले में कंठी व जंजीर निर्मित्त की गयी है। हाथ में बाजुबन्द, छल्ला, अँगुठी आदि चित्रित है। तथा माथे पर टीका, पैरों में जयपुरी जूतियाँ निर्मित्त है।

जयपुर कलम में खनिज, वानस्पतिक, रासायनिक, जैविक व सोने–चाँदी, नीला, पीला, लाल व चटकीलें वर्णों का प्रयोग किया गया है तथा पैमाना चित्राकृति के अन्तराल को उत्तम स्वरूप प्रदान करता है। जयपुर के चितेरो ने प्रमाण चयन में अलग–अलग विधियों का प्रयोग किया है। कहीं–कहीं यथार्थवादी, परम्परागत, तो कहीं कल्पनात्मक। सामान्यतः स्त्री आकृति सिर का छः गुना व पुरुषाकृति सात गुना बनी है।

यहाँ पर कलाकारों ने क्षयवृद्धि के सिद्धान्त द्वारा आकारों के मध्य दूरी को सुस्पष्ट किया है। जयपुर के कुछ चित्रकारों को छोड़कर बाकी सभी इस सिद्धान्त पर खरे उतरे हैं। इस दृष्टिपात से जयपुर कलम के कलाकारों ने मुग़ल चित्रकारों का अनुकरण किया है। कलाकृति में इसके स्पष्ट दर्शन होते हैं तथा यहाँ के कलाकारों ने मुग़ल शैली के रेखा निरूपण को भी विशेष महत्व दिया है। तथा बाहरी रेखाओं के द्वारा छाया–प्रकाश को उभारा है। पुरुष आकृति व नारी

आकृति के बालों के चित्रांकन में रेखीय वर्तना का प्रयोग किया गया है। शरीर में उभार, गोलाई व कठोरता दिखाने के लिए चित्राकृत्तियों में तीन वर्तना (पत्रज, रेखीक, बिन्दुज) का प्रयोग किया गया है।

चित्राकृत्तियों में नायक–नायिका का चित्रण प्रतीकात्मक (आत्मा–परमात्मा) रूप में किया गया है तथा चित्रों के हाशियों को आलेखन, बेलबूटों से सुसज्जित किया है। यहाँ पर पशु–पक्षियों, चूहा, गरूड़ चीता, गाय, बैल, घोड़ा, मोर, सारस, बत्तख, तोता, कबूतर, ऊँट, हाथी आदि का चित्रण कलाकृतियों में दृष्टव्य है और कहीं–कहीं इनको प्रतीक रूप में भी चित्रित किया गया है। अतः जयपुर शैली या इनकी दीवारों पर पेड़ पौधों का चित्रांकन इनको सुसज्जित करने हेतु उत्कृष्ट ढंग से किया गया है। जयपुर सूरतखाने के कलाकार अपनी उत्कृष्ट चित्रांकन परम्परा के लिए राजस्थान में अपना एक अलग स्थान बनाये हुए थे। ये चित्रण चित्रकार पीढ़ी दर पीढ़ी अपनाते रहते थे और आज भी कुछ चित्रकार घराने इस परम्परा को संजोयें हैं।

इस प्रकार जयपुर शैली के कलाकारों ने भारतीय परम्परा के अनुरूप चित्राकृत्तियों 'विष्णुधर्मोत्तर पुराण', 'समरांगण सूत्रधार', 'चित्रलक्षण', 'कुवलयमाला' एवं 'समराइच्च' में प्रस्तुत चित्रकर्म के सिद्धान्तों का पालन किया है। जयपुर कलम की चित्राकृति कलात्मक दृष्टिपात से अपनी एक विशेष पहचान रखती है जो स्वयं में एक आदर्या है। साथ ही अनुकरणीय उदाहरण है जो आज वर्तमान समय में भी अभिप्रेरणा का कार्य करती है। प्रेरणा स्त्रोत है। इसका कला संसार में कलात्मक योगदान चिरस्मरणीय कहा जाये तो शायद कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. प्रताप, डॉ0 रीता, *जयपुर की चित्रांकन परम्परा,* राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, प्रथम संस्करण, 2011, पृं0–**14**
2. उपरोक्त, पृं0–**14**
3. वशिष्ठ, डॉ0 पंकज कुमार, *'रंगभूमि कला–संस्कृति के विविध आयाम'*, यश पब्लिकेशन, शाहदरा, प्रथम संस्करण, 2019, पृं0–152
4. प्रताप, डॉ0 रीता, *जयपुर की चित्रांकन परम्परा,* राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, प्रथम संस्करण, 2011, पृं0–**87**
5. नीरज डॉ0 जयसिंह, *राजस्थानी चित्रकला,* राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृं0–**78**
6. प्रताप, डॉ0 रीता, *भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास*, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, आठवाँ संस्करण, 2011, पृं0–**36**
7. शर्मा, कु0 राजन, *'शोध प्रबन्ध', 'मेवाड़, किशनगढ़, जयपुर और बूँदी शैली के लघु चित्रों में मानव रूपांकन का तुलनात्मक अध्ययन',* चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ 2002, पृ0–**03**